Dr. Gautam Kumar
BA(H) 4(Sub.) Part-II
Paper-IV

संविधानवाद की विशेषताएँ
(Characteristics of Constitutionalism)

संविधानवाद की विकासशील प्रकृति से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी समाज की राजव्यवस्था के लिए यह महत्वपूर्ण है। संविधानवाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

(i) **संविधानवाद मूल्य सम्बद्ध अवधारणा है** — संविधानवाद एक मूल्य सापेक्ष अवधारणा है, जो उन सभी तत्वों से युक्त हो। संविधान वाद का संबंध राष्ट्र के जीवन दर्शन से है। यह उन मूल्यों, विश्वासों व राजनीतिक आदर्शों की ओर संकेत करता है, जो राष्ट्र के सभी नागरिक को प्रिय है और जो हर राष्ट्र का जीवन आधार होता है। संविधानवाद का आधार समाज की संरचना होता है, जिसका संबंध सामाजिक और राजनीतिक मूल्यों से होता है।

(ii) **संविधानवाद संस्कृति सम्बद्ध अवधारणा है** — संविधानवाद की धारणा स्थान विशेष की संस्कृति से सम्बद्ध पायी जाती है। प्रत्येक देश के आदर्श, मूल्य व विचारधाराएँ उस देश की संस्कृति की ही उपज होते हैं।

(iii) **संविधानवाद गतिशील अवधारणा है** :— संविधानवाद मानव के विकास के साथ-साथ विकसित होता है। संविधानवाद समाज के विकास के गतिशील प्रक्रिया में सहायक है। संविधानवाद की गतिशील प्रकृति अति आवश्यक है, क्योंकि समय परिवर्तन के साथ ही मूल्यों में भी परिवर्तन आता है तथा संस्कृति भी विकसित होती है। संविधानवाद में स्थायित्व के साथ-साथ गत्यात्मकता भी पायी जाती है।

Scanned with CamScanner

(iv) संविधानवाद समागी अवधारणा है- एक राष्ट्र के मूल्य, विश्वास व राजनीतिक आदर्श एवं संस्कृति के प्रति अन्य देशों में भी निष्ठा हो सकती है। जिसके कारण कई देशों के राजनीतिक आदर्श आस्थाएँ व मान्ताएँ समान हो सकते हैं। ऐसे देशों में संविधानवाद आधारभूत समानताएँ रखता है। उदाहरणार्थ - पाश्चात्य संस्कृति वाले देशों में संविधानवाद में समानता पायी जाती है।

(v) संविधानवाद साध्य से संबंधित अवधारणा है- संविधानवाद मूलतः साध्यों से संबंधित अवधारणा है किन्तु यह साधनों की पूर्णतया अवहेलना नहीं कर सकता है। संविधानवाद पहले समाज के विकास के साधन के रूप में काम आता है और फिर साध्य बन जाता है, जिससे समाज का विकास निरन्तर होता रहे।

(vi) संविधानवाद संविधान पर आधारित अवधारणा है- सामान्य परिस्थितियों में हर लोकतांत्रिक राजनीतिक समाज के मूल्यों व गन्तव्यों का संविधान में स्पष्ट उल्लेख किया जाता है। ऐसे संविधान पर ही संविधानवाद आधारित रहता है।

(vii) प्रजातन्त्र का ज्ञान कराने वाली अवधारणा - द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्वतंत्र हुए अनेक विकासशील देशों ने अपनी संस्कृति और सभ्यता को पुनर्जीवित करते हुए अपने यहाँ प्रजातांत्रिक संविधान को जन्म दिया।

Scanned with CamScanner